नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

महंगाई की बढ़ती रफ्तार पर लगे लगाम

बरसों तक नियंत्रण में रहने के बाद खुदरा महंगाई का फिर रफ्तार पकड़ना चिंता का विषय है. जुलाई में खुदरा महंगाई बढ़कर 4.45 प्रतिशत पहुंच गई, जो पिछले कई महीनों का उच्च स्तर है. खाद्य महंगाई भी बढ़ी है. भले ही महंगाई अभी रिजर्व बैंक की सहनशील सीमा छह प्रतिशत से नीचे हो, लेकिन आम आदमी के लिए आंकड़ों से ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि रोजमर्रा की जरूरतों की कीमतें उसकी आय की तुलना में कितनी तेजी से बढ़ रही हैं.

महंगाई का असर हर परिवार पर समान नहीं पड़ता. जिस परिवार की आय का बड़ा हिस्सा भोजन, किराया, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन और बिजली जैसे जरूरी खर्चों में चला जाता है, उसके लिए कीमतों में मामूली बढ़ोतरी भी बजट को बिगाड़ देती है. इसलिए महंगाई दर चार या पांच प्रतिशत होने का अर्थ यह नहीं कि आम परिवार पर उसका असर भी उतना ही सीमित है. खासकर मध्यवर्ग के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य का लगातार महंगा होना बड़ी चुनौती बनता जा रहा है. वैश्विक परिस्थितियों ने भी मुश्किल बढ़ाई है. पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष और होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर पैदा हुए तनाव से कच्चे तेल के बाजार में अस्थिरता बढ़ी है. दरअसल,भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के बड़े हिस्से के लिए आयात पर निर्भर है. ऐसे में अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा होने पर उसका सीधा असर परिवहन लागत और अंततः लगभग हर वस्तु की कीमत पर पड़ता है. सरकार को इस संभावित दबाव से निपटने के लिए अभी से रणनीति बनानी होगी.

बहरहाल,महंगाई रोकने के लिए केवल ब्याज दरों या मौद्रिक नीति पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा. केंद्र और राज्य सरकारों को जमाखोरी तथा कालाबाजारी पर सख्ती करनी होगी. खाद्य वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना, बिचौलियों की भूमिका कम करना और किसानों से उपभोक्ताओं तक उत्पाद पहुंचाने की व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाना जरूरी है. दाल, खाद्य तेल, सब्जियों और अन्य आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन तथा भंडारण की ठोस रणनीति बनानी होगी.

सरकार को पेट्रोल-डीजल और रसोई गैस की कीमतों के मामले में भी संतुलित नीति अपनानी होगी. अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत बढ़ने का पूरा बोझ उपभोक्ताओं पर डालने के बजाय करों और अन्य उपायों के माध्यम से अस्थायी राहत देने पर विचार किया जा सकता है. साथ ही, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों और घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना दीर्घकालिक समाधान है. सबसे महत्वपूर्ण सवाल आय और रोजगार का है. यदि आर्थिक विकास की दर अच्छी होने के बावजूद आम आदमी की आय उसी गति से नहीं बढ़ती, तो विकास का लाभ अधूरा रह जाता है. सरकार को रोजगार सृजन, छोटे कारोबारों को प्रोत्साहन, कौशल विकास और मजदूरी बढ़ाने वाली उत्पादक अर्थव्यवस्था पर ध्यान देना होगा. मुफ्त सुविधाओं का दायरा बढ़ाना स्थायी समाधान नहीं है. जरूरत ऐसी अर्थव्यवस्था बनाने की है, जिसमें गरीब और मध्यवर्ग अपनी आय से बढ़ती कीमतों का मुकाबला कर सकें.

महंगाई पर समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो यह केवल आर्थिक समस्या नहीं रहेगी, बल्कि घरेलू बचत, उपभोग और सामाजिक संतुलन को भी प्रभावित करेगी. सरकार को आंकड़ों में राहत के बजाय आम परिवार की वास्तविक परेशानी को केंद्र में रखकर नीतियां बनानी होंगी. मजबूत आपूर्ति व्यवस्था, नियंत्रित कीमतें, बढ़ते रोजगार और आय में वृद्धि ही महंगाई के खिलाफ सबसे टिकाऊ कवच हो सकते हैं.

नक्सल और दिमागी नक्सल

लक्ष्मण सिंह
पूर्व सांसद

> दिमागी नक्सल शब्द का उपयोग कर और एक निरर्थक विपक्ष का सहारा लेकर आप अपनी विफलताओं को छुपा नहीं सकते, आपसे सवाल करने वाले सड़कों पर निकल चुके हैं, ये हमारे देश के बच्चे हैं जो भविष्य में आपकी सीट पर बैठेंगे! उद्योगपतियों के चक्कर में ज्यादा मत पढ़िए, ये किसी के नहीं होते, ये केवल सत्ता के होते हैं, आप जब शासन में नहीं रहेंगे तो ये जो शासक होंगे उनके चक्कर काटेंगे और आपकी बुराई करेंगे क्योंकि इन्हें केवल और केवल अपने बही खातों और अपने कालेधन से मतलब है जिसे आपने समाप्त करने का वादा किया था और नहीं कर पाए हैं आज तक क्योंकि चुनावों में इसका खुल कर प्रयोग होता है! देश सबका है और आप स्वयं भी तो बहुत सामान्य परिवार से आते हैं, आपके परिवार की सादगी भी हमने देखी है मोदी जी, आप कहां इन उद्योगपतियों के चक्कर में पड़ रहे हो और अपने छात्रों को इनके इशारों पर दिमागी नक्सल कह रहे हो, ये गलती भविष्य में मत करियेगा!
>
> **जय हिंद!!**

15 अगस्त को भारत ने 80 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया और देश को कई वर्षों की गुलामी की जंजीरों से आजाद कराया, यह कोई साधारण घटना नहीं थी, अहिंसा के पथ पर चलकर आजादी पाना जबकि अंग्रेजों ने हिंसा, क्रूरता के बल पर हमारे देश के लाखों नौजवानों को और स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वालों को जेल में बंद कर दिया था, कई शहीद हुए, तब हमारा देश स्वतंत्र हुआ!

महात्मा गांधी , जिन्होंने मुख्य भूमिका देश को आजाद कराने में निभाई थी उनकी हत्या कर दी गई और वो व्यक्ति कोई बाहर से नहीं आया था, हमारे देश का ही एक सरफिरा नागरिक था, क्या वो दिमागी नक्सल था जैसा हाल ही में लाल किले के संबोधन में मोदीजी द्वारा भाषण में कहा गया है? नहीं था, उसकी क्या सोच थी सब जानते हैं! उस समय नक्सलवाद शब्द ही नहीं था, यह आंदोलन 70 के दशक में शुरू हुआ बंगाल के नक्सलबाड़ी गाँव से जहां जमींदारों और सूद खोरों ने गरीब और अशिक्षित किसानों की अंगूठा लगवाकर भूमि हड़प ली थी और दुर्भाग्यवश यह प्रथा आज भी चल रही है, मेरे पास सैंकड़ों उदाहरण हैं इसके, उस समय जो शिक्षित बेरोजगार थे उनमें से एक नौजवान, कानू सान्याल उन किसानों की लड़ाई लड़ने आगे आया और जब कहीं से उसे न्याय नहीं मिला तो फिर इस आंदोलन ने एक हिंसक रूप लिया और कुछ वर्षों में यह आंदोलन देश के बहुत बड़े हिस्से में फैल गया!

अगर उस समय कांग्रेस शासन इन नौजवानों से चर्चा कर लेता और इसे दबाने का प्रयास नहीं करता तो यह इतना फैलता भी नहीं और न ही यह हिंसक होता! यह मामला तहसील स्तर का था और भ्रष्ट अधिकारियों और नेताओं के कारण किसानों को न्याय नहीं मिलने के कारण फैलता गया और फिर इतना हिंसक हो गया कि आज सेना को बुलाना पड़ा, कई पुलिस कर्मी शहीद हुए, कई निर्दोष नौजवान मारे गए! यह शासन की बहुत बड़ी भूल थी जिसके कारण नक्सलवाद फैला, यह बच्चे हमारे देश के हैं कहीं बाहर से नहीं आये हैं! जब नक्सलवाद का आंदोलन 70 के दशक में बढ़ रहा था उस समय मैं दिल्ली विश्व विद्यालय में इंदौर के डेली कॉलेज से स्कूल पास कर के गया था और नक्सल या नक्सलवाद शब्द न तो सुना था और न ही पड़ा था क्योंकि यह स्कूल भूतपूर्व राजा, महाराजाओं के दान में दिए गए धन से खोला गया था और संपन्न परिवार के बच्चे इसमें शिक्षा प्राप्त करते थे, मैं स्वयं भी एक भूतपूर्व राज परिवार से आता हूं जिनसे नक्सल वादी नफरत करते थे और आज भी करते हैं! मेरे साथ जो छात्र पढ़ते थे उनमें से कई नक्सल सोच से सहानुभूति भी रखते थे! जब मैने उन्हें बताया कि मैं एक भूतपूर्व राज घराने से हूं तो उन्होंने मुझसे दूरी बना ली और मेरे कई प्रयासों के पश्चात भी मेरे मित्र नहीं बने!

मैंने इस विचार धारा को समझने का प्रयास किया और मैंने पाया कि अगर ये सहपाठी हिंसा की चर्चा नहीं करें तो इनके जैसा बुद्दिमान कोई नहीं है क्योंकि ये लोग क्लास में बहुत अच्छे नम्बर लाते थे, डिबेट में हमेशा, तर्क के आधार पर जीत जाते थे और कई तो भारतीय प्रशासनिक सेवा में भी चयनित किए गए थे और देश की सेवा की! इन्हें हम देशद्रोही नहीं कह सकते और अर्बन नक्सल कहकर इन्हें और हिंसा करने पर मजबूर नहीं कर सकते! स्वयं महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत ने हमेशा हर विचारधारा को अपनाया है, बौद्ध और जैन धर्म तो भारत में ही जन्मे हैं जो आज विश्व के कई हिस्सों में अपनाए गए हैं, और यह भी कहा था कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए दिमाग की खिड़की खुली रखना चाहिए! विश्व व्यापार संधि के पश्चात जब विश्व का व्यापार एक हो गया है, विचारधारा की स्वतन्त्रता और भी अनिवार्य हो गई है, इसे संकीर्ण दृष्टिकोण से नहीं देखना चाहिए!

प्रधानमंत्री जी को छात्रों से संवाद और अधिक करना चाहिए और अन्य राजनीतिक दलों को इन्हें हथियार बनाने के बजाय इनकी मदद करना चाहिए, दोहरे मापदंड वाला आंदोलन नहीं होना चाहिए जैसा झारखंड के छात्रों के साथ किया गया जहां कांग्रेस की सहयोगी सरकार है! यह बच्चे हमारे देश के भविष्य हैं और इन्हें समझने और समझाने की आवश्यकता है, ये सभी साधारण परिवार के हैं, इनमें सम्पन्न परिवार का कोई नहीं है और इन बच्चों को उनकी आवश्यकता भी नहीं है.

मालवा- निमाड़ की डायरी

अंचल के एनजीओ की धड़कने बढ़ीं

संजय व्यास

संसद में समर्थन के लिए दो तिहाई संख्या पूरी न होते देख केंद्र की मोदी सरकार ने फिलहाल विदेशी फंडिंग के गलत इस्तेमाल पर अंकुश लगाने वाला एफसीआरए बिल टाल दिया है, मगर इस बिल के आने से ही देवास, खरगोन, बड़वानी में कार्यरत एनजीओ की धडक़नें बढ़ गई ओर कर्ताधर्ताओं में बैचेनी साफ नजर आ रही है. यदि यह बिल पास होता है तो अंचल में कार्यरत समाज प्रगति सहयोग संस्था (एसपीएस) पर सबसे ज्यादा असर होगा.

दशकों पहले देवास जिले की बागली तहसील के छोटे से कस्बे जटाशंकर में जन्मी इस संस्था ने देखते देखते अपना विस्तार देवास, बड़वानी, खरगोन होते हुए समीपवर्ती महाराष्ट्र के गांवों तक कर लिया. बताया जाता है कि संस्था ने अपनी विस्तारित शाखाओं के माध्यम से गांव-गांव में करीब 40 हजार महिला समूहों को जोड़ रखा है. यह ग्रामीण जल सुरक्षा और आजीविका के क्षेत्र में काम करती है . आरोप लगते रहे हैं कि करोड़ों रुपए की विदेशी फंडिंग का उपयोग आंदोलनों के लिए किया जाता रहा है. चर्चा है कि इस एफसीआरए बिल के आने से फंड के इस्तेमाल से पारदर्शिता रखनी होगी, हिसाब-किताब होगा, मनमाने लेन-देन पर अंकुश रहेगा.

कार्य कलापों पर सवालिया निशान

बागली मुख्यालय से संचालित समाज प्रगति सहयोग संस्था की मालवा- निर्माण क्षेत्र में विस्तार से फैली शाखाओं में ज्यादातर महिला समूह कार्य कर रहे हैं. बताया जाता है कि बाबा आमटे और नर्मदा बचाओ आंदोलन की प्रमुख मेघा पाटेकर द्वारा सिंचित यह संस्था वर्तमान में प्रतिवर्ष एक अरब रुपए से अधिक का वित्तीय लेनदेन करती है. इसी श्रृंखला में रानी मारिया फाउंडेशन भी इस क्षेत्र में विस्तार पूर्वक अपनी जगह बना चुका है, जिसके तहत स्कूल, अस्पताल और अन्य आश्रम संचालित हैं. यदि यह कानून लागू होता है तो एक लाख से अधिक कर्मचारी भी प्रभावित होंगे. हालांकि इन संस्थानों में वित्तीय लेनदेन अभी तक चल रहे कानून के तहत विदेशों से प्राप्त फंडिंग से ही होता है, लेकिन एफसीआरए बिल के दायरे में आने से बहुत कुछ अंकुश लग जाएगा. वर्तमान में समाज प्रगति सहयोग के छोटे से छोटे समूह लाखों रुपए का दान भी करते हैं. हाल ही में आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र पुंजापुर में 7 लाख रुपए की कापी किताब प्रगति समाज समूह द्वारा वितरित की गई, जिसके पीछे बताया गया कि यह सभी महिलाओं की बचत का अंश है, जबकि वास्तविक स्थिति में कई समूह घाटे में चल रहे हैं. कुछ महिलाएं और सदस्य लोन लेकर चुका नहीं पा रहे इसके चलते उनकी घाटा पूर्ति कैसे होती है इस पर सवालिया निशान है.

जीतू ने बदहाली पर जनप्रतिनिधियों को घेरा

मादक पदार्थ प्रकरण में घिरे भाई के कारण बैकफुट पर आए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी कश्मकश भरी दतिया विधान सभा सीट पर उपचुनाव जिताने के बाद उत्साह से भरे हैं. कांग्रेस आलाकमान की नजरों में उनके अंक बढ़ने से उनमें पुनः आत्म विश्वास के संचार हुआ है. वे पूरे चुनाव के दौरान दतिया में ही डटे रहे, भाई पर मुसीबत के बाद भी मैदान नहीं छोड़ा था. अब उन्होंने इंदौर की राजनीति की ओर रुख कर लिया है. स्थानीय भाजपा को घेरने के लिए उन्होंने पूरे शहर में खुदाई के बाद खो गई सडक़ों और उससे परेशान नागरिक व आधे-अधूरे पड़े विकास कार्यों से शहर की बदहाली को मुद्दा बनाया है. जीतू पटवारी ने सवाल किया है कि इंदौर ने भाजपा को एक तरफ़ा बहुमत दिया, किंतु बदले में क्या मिला? विधायक निधि के 63 प्रतिशत काम अभी तक शुरू ही नहीं हुए! यह कैसी व्यवस्था है, जहां टेंडर मंजूर होने के बावजूद काम अटका है? क्या यह भाजपाइयों की राजनीतिक उदासीनता का नतीजा नहीं? साथ ही उन्होंने इंदौरवासियों से कहा है कि सांसद/विधायकों से पूछें - मेरे क्षेत्र का विकास क्यों रुका है? विधायक निधि का पैसा कहां गया?

वंदे मातरम पर ऐतराज बेमतलब

संविधान सभा ने 'जन गण मन' को भारत के राष्ट्रगान के रूप में मान्यता दी थी जबकि वंदे मातरम को राष्ट्रगीत का दर्जा दिया गया था. यह दोनों ही हमारी राष्ट्रीय पहचान का अहम हिस्सा हैं. इस वर्ष पहली बार स्वाधीनता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से वंदे मातरम का गायन किया गया. यद्यपि आजादी के पूर्व से कांग्रेस के अधिवेशनों में वंदे मातरम गाया जाता था लेकिन फिर 52 सेकंड में पूरा हो जाने वाले जन गण मन को अधिकारिक रूप से अपनाया गया. सेना व पुलिस के बैंड पर भी इसकी धुन पसंद की गई. अब वंदे मातरम को सरकार ने पूरा महत्व दिया है और हर राज्य को इसे अपनाने का निर्देश दिया गया है. यह मातृभूमि की वंदना है तथा क्रांतिकारियों ने वंदे मातरम का नारा लगाते हुए देश के लिए बलिदान दिया था. वंदे मातरम की रचना बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने की थी. यह गीत संन्यासी विद्रोह पर लिखे उनके उपन्यास 'आनंदमठ' में था. 'जन गण मन' गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने लिखा था, जिसे उन्होंने 1896 के कांग्रेस अधिवेशन में गाया था. राष्ट्रगान व राष्ट्रगीत दोनों का समान महत्व व गरिमा है. यह आश्चर्य की बात है कि नगालैंड में गिरजाघरों के संगठन ने वंदे मातरम का विरोध किया है. केंद्र के स्पष्ट निर्देश के बावजूद केरल सरकार ने अपने स्वाधीनता दिवस कार्यक्रम में वंदे मातरम का गायन नहीं किया. इसी तरह मुस्लिम समुदाय के कुछ संगठन भी इसके विरोध में रहे हैं. ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए. इसका राजनीति के आधार पर विरोध अत्यंत अनुचित है. वंदे मातरम का पूर्ण गीत कुछ लंबा अवश्य है, लेकिन देशवासी क्रमशः इसे आत्मसात कर लेंगे. मातृभूमि की वंदना हर व्यक्ति को करनी चाहिए. शास्त्रीय कार्यक्रमों व आयोजनों की शुरुआत व समापन में क्रमशः राष्ट्रगान व राष्ट्रगीत दोनों को अपनाया जा रहा है. हर किसी से अपेक्षा है कि जब भी इन्हें बजाया जाए, लोग मर्यादा बनाए रखें और सम्मानपूर्वक खड़े हों.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

हीरोइन का सेकंडहैंड पति फिल्मी दुनिया की यही दुर्गति

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, फिल्म अभिनेत्रियां आम तौर पर सेकंड हैंड हस्बैंड पसंद करती हैं. जब काम कम मिलने लगता है और उम्र बढ़ने लगती है, तो वह तुरंत किसी ऐसे इंसान से शादी का प्लान बनाती हैं, जिसकी एक बीवी पहले से मौजूद हो. ऐसा क्यों होता है?'

हमने कहा, 'पसंद अपनी-अपनी और खयाल अपना-अपना ! जिसकी जैसी मर्जी, वैसा करे ! फिल्म अभिनेत्री सेकंड हैंड पति इसलिए चुनती हैं, क्योंकि वह अनुभवी व परिपक्व रहता है. उसे वैवाहिक जीवन की सक्रिप्ट समझने की जरूरत नहीं पड़ती. यदि वह कोई खूसट प्रोड्यूसर डायरेक्टर रहता है, तो टेक-रिटेक के चक्कर में पैकअप नहीं करता, बल्कि उसका शॉट ओके रहता है. उसकी दौलत पर हीरोइन की निगाह रहती है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हमें यह फिल्मी सेट की भाषा समझ में नहीं आती. सीधे-सीधे बताइए कि खूबसूरत दिखने वाली हीरोइन अपनी अदाएं दिखाकर नए नवेले कुंवारे युवक से शादी करने की बजाय किसी दुजवर से ब्याह

क्यों रचाती है?'

हमने कहा, 'हीरोइन के लिए प्यार या रोमांस कोई नई या अनजानी चीज नहीं रहती. वह 3 शिफ्ट में काम करके एक ही दिन में 3 अलग-अलग हीरो से मोहब्बत करके दिखाती है. यह उसका धंधा या प्रोफेशन है. जब वह भरपूर पैसे कमा लेती है और उसे लगता है कि फिल्में फ्लॉप हो रही हैं तो वह घर बसाने की सोचती हैं. तब उसे एक ऐसा जीवनसाथी चाहिए, जो अक्ल का अंधा और गांठ का पूरा हो. वह अधीर, उतावला या जलनखोर न हो. उसकी स्वच्छंद जिंदगी में कोई खलल न डाले और उससे ज्यादा पूछताछ न करे कि कहां जाती हो, किससे मिलती हो. वह सिर्फ नाम का पति रहे और किसी तरह का हक न जताए. इसीलिए उसे सहनशील, आज्ञाकारी सेकंड हैंड पति पसंद आता है. हीरोइन की ऐसी शादी एक एडजस्टमेंट होती है, जिसमें पति चूं-चपड़ नहीं करता. वह हीरोइन के देर रात तक पार्टियों में रहने, पुरुष मित्रों से मिलने पर भूलकर भी एतराज नहीं करता.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम समझ गए कि हीरोइन को पति के रूप में एक एंटीक या सजावटी वस्तु चाहिए जो उसका सेकंड हैंड पति ही हो सकता है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12352 - डॉ. सागर खादीवाला

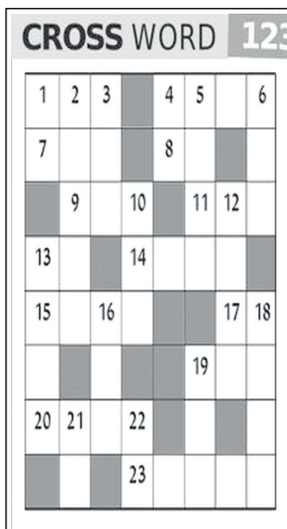

ऊपर से नीचे

1. किसी व्यक्ति का एक जगह से चलकर दूसरी जगह पहुंचना 2. सोने का स्थान या गृह 3. धन, धन की राशि 4. आशा, कामना, सहारा (सं.) 5. अपने काम दूसरे से करवाना 6. रसपूर्ण करना, प्रसन्न करना 10. कसैला हो जाना, कसने का काम दूसरे से कराना 12. अस्तबल, गाड़ीखाना (सं.) 13. अयोध्या के राजा और श्रीरामजी के पिता 16. वह राक्षस जिसने स्वर्ण-हिरन बनकर सीताजी को धोखा दिया था 18. प्रख्यात, प्रसिद्ध 19. तपने की क्रिया या भाव 21. छोटा 22. दही मथने की लकड़ी, मथानी

बाएं से दाएं

1. अग्नि, राक्षस, वायु, (सं) 4. नदी के दोनों किनारे, इस पार्श्व से उस पार्श्व तक 7. अग्रेसर, सरदार, किसी नाटक आदि का प्रमुख पात्र 8. सत्य, सच्ची बात 9. नाम से प्रसिद्ध 11. निछावर करना, उत्सर्ग 13. छलकपट 14. बनारस से 4 मील दूर उत्तर-पश्चिम में एक स्थान जहां पर शिव का मंदिर तथा एक बहुत बड़ा बौद्ध स्तूप है 15. लजाना 17. संध्या 19. खोज 20. पृथ्वी पर रहने वाले जीव 23. एक छोटा रेंगने वाला कीड़ा जो लाल रंग का होता है

Solution 12351

अ	रू	ण	■	क	व	ल	■
मा	मा	■	का	ल	■	ह	वा
न	■	स	ला	ह	■	र	न
त	क	ली	■	■	छा	■	री
■	द	म	न	■	ल	ता	■
जा	म	■	क	म	■	ला	भ
न	■	क	ल	दा	र	■	य
ना	दा	नी	■	री	त	ना	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारम्भ में मित्रों के मिलन से मन में प्रसन्नता होगी. व्यस्तता रहेगी. व्यवसायिक मित्रों के सहयोग से आर्थिक योजनायें पूंजी निवेश होगा. वर्ष के अन्त में मित्रों से विवाद हानिकारक रहेगा. आजीविका के क्षेत्र में दौड़धूप करना होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को सामाजिक विवाद होगा. मान-सम्मान के प्रति सचेत रहें. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को आजीविका के क्षेत्र में अत्याधिक भागदौड़ करना होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों का पूंजी निवेश होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को मित्रों के सहयोग से आर्थिक वृद्धि होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को श्रम की अधिकता रहेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ विवादित स्थिति से हानि हो सकती है. मकर और कुम्भ राशि के व्यक्तियों को सफ्लता के योग हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला लंबे कद का फुर्तीला स्वाभाव का, बुद्धिमान चतुर व्यवहार कुशल होगा. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. ज्वर अतिसार, निमोनिया, आदि से 5 वर्ष की आयु तक कुछ तकलीफ होगी.बाद में स्वस्थ्य रहेगा. यात्राप्रिय एवं मनोरंजन का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

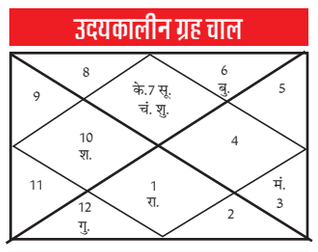

पंचांग

रा.मि. 27 संवत् 2083 श्रावण शुक्ल षष्ठी भौमवासरे रात 7/25, चित्रा नक्षत्रे दिन 7/47, शुभ योगे दिन 7/13, कौलव करणे सू.उ. 5/34, सू.अ. 6/26, चन्द्रचार तुला, शु.रा. 7,9,10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12,3,4,6 शुभांक- 9,2,6.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल षष्ठी को चित्रा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, शक्कर सरसों, सोयाबीन, पायोलिन आदि में तेजी होगी. चना, अनाज, पर नरमी रहेगी. भाग्यांक 2697 है.

मेष- कार्यक्षेत्र में चल रही उलझनें दूर होंगी. दिल की बातें अपनों से कह दें, तनाव कम होगा. कार्यों में विवेक के साथ काम लेना हितकर रहेगा. परिश्रम अधिक रहेगा.

वृषभ- भावुकता में लिये गये फैसले बदलना पड़ेंगे. आत्म विश्वास बनाये रखें, मुश्किलें कम होंगी. श्रमसाध्य कार्यों में प्रयास करने पर सफ्लता मिलेगी.

मिथुन- नई जिम्मेदारियां आने से कार्यक्षेत्र में व्यस्तता रहेगीं. शिक्षा के क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी. यश मान सम्मान कीर्ति मिलेगी.

कर्क- मन ही मन किसी बात को लेकर परेशान रहेंगे. जोखिम के कार्य में समय बर्बाद होगा. सामाजिक कार्य बनेंगे. पूज्य व्यक्ति की सलाह हितकर रहेगी.

सिंह- धार्मिक कार्यों में शामिल होने से खुशी मिलेगी. मित्र मिलेंगे. यश प्राप्त होगा. आर्थिक समस्या का हल होगा. किये गये प्रयास सार्थक होंगे.

कन्या- सहकर्मी आपके सीधेपन का लाभ उठाने का प्रयास करेंगे. पराक्रम में वृद्धि होगी. नये कार्यों के प्रति विशेष रूचि रहेगी. प्रयासों में सफ्लता प्राप्त होगी.

तुला- काननी मामले में लापरवाही से नुकसान होगा. साझेदारी लाभकारी रहेगी. अनावश्यक कार्यों पर खर्च होगा. कामकाज में बाधायें आयेंगी.

वृश्चिक- व्यापारिक सौदे लाभकारी रहेंगे. दोस्तों से विवाद की संभावना है. आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी. मानसिक सहयोग और शांति मिलेगी.

धनु- विरोधियों केकारण काम करने में परेशानी होगी, जीवनसाथी का साथ खुशी देगा. राजकीय कार्यों में सफ्लता मिलेगी. सामाजिक कार्यों में सहयोग मिलेगा.

मकर-महत्वपूर्ण मामले में फैसला लेने से बचेंगे. अनहोनी का भय वृषभे बढ़ने से रोकेगा. स्वास्थ्य में सुधार होगा. नवीन योजनाओं का विकास होगा.

कुम्भ- मेहमानों के कारण अपना कार्यक्रम बदलना पड़ेगा. धार्मिक आयोजन सुखद रहेंगे. अनावश्यक विवादों को टालना चाहिये.

मीन- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे. निजी कार्यों को पूरा करने में सफ्लता मिलेगी. शारीरिक सुख शांति तथा पारिवारिक दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा.

SUDOKU 7484

	4		7		1			3
3		5		4		1		
	2				8			
4		3						
	8			2			1	
						8		6
			2				3	
		9		8		2		4
1			4		6		9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7483

9	2	7	4	8	6	5	3	1
5	1	6	3	2	9	4	8	7
3	4	8	7	1	5	9	6	2
8	3	4	9	5	1	2	7	6
7	6	5	8	4	2	3	1	9
1	9	2	6	3	7	8	5	4
6	7	3	2	9	8	1	4	5
2	8	1	5	7	4	6	9	3
4	5	9	1	6	3	7	2	8